मंगलाचरण

हे समरथ परमात्मा, हे निर्गुण निरंकार।
तू कर्ता है जगत का, तू सब का आधार।

कण–कण में है बस रहा, तेरा रूप अपार।
तीन काल है सत्य तू, मिथ्या है संसार।

घट–घट वासी हे प्रभु, अविनाशी करतार।
दया से तेरी हों सभी, भवसागर से पार।

निराकार साकार तू, जग के पालनहार।
है बेअन्त महिमा तेरी, दाता अपरम्पार।

परम पिता परमात्मा, सब तेरी सन्तान।
भला करो सब का प्रभु, सब का हो कल्याण।

धुनि

तेरी ओट सहारा तेरा तन–मन घोल घुमावां।
कहे अवतार तेरे ही दाता दिन रातीं गुण गावां।
इक तूं ही निरंकार, इक तूं ही निरंकार।।

मैं हाँ सदा भुल्लणहार –2
तूं है दाता बख्शणहार –2
मेरे अवगुण न चितार –2
इक तूं ही निरंकार, इक तूं ही निरंकार।।

तेरा रूप है ये संसार –2
सब दा भला करो करतार –2
मेरी मंग है एह दातार –2
इक तूं ही निरंकार, इक तूं ही निरंकार।।

मेरा डोले न इतबार –2
बख्शो श्रद्धा भक्ति प्यार –2
करॉं मैं सन्तां दा सत्कार –2
इक तूं ही निरंकार, इक तूं ही निरंकार।।